

## सूरह साद - 38



सूरह साद के संक्षिप्त विषय  
यह सूरह मक्की है, इस में 88 आयतें हैं।

- इस में पहले अच्छर (साद) आया है जिस के कारण इस का नाम ((सूरह साद)) है।
- इस की आरंभिक आयतों में कुर्आन के शिक्षाप्रद पुस्तक होने की चर्चा करते हुये यह चेतावनी दी गई है कि जो इसे नहीं मानेंगे वह अपने आप को बुरे परिणाम तक पहुँचायेंगे।
- आयत 12 से 16 तक उन जातियों का बुरा अन्त बताया गया है जिन्होंने रसूलों को झुठलाया। फिर आयत 17 से 24 तक नबियों के, अल्लाह की ओर ध्यानमग्न होने की चर्चा की गई है। फिर अल्लाह की आज्ञा का पालन करने और न करने दोनों का परलोक में अलग-अलग परिणाम बताया गया है।
- आयत 65 से 85 तक में बताया है कि नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) सावधान करने के लिये आये हैं। और आप के विरोध करने का वही फल होगा जो इब्लीस के अभिमान का हुआ।
- अन्तिम आयतों में नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) तथा कुर्आन के सत्य होने तथा कुर्आन की बताई हुयी बातों के अवश्य पूरी होने की ओर संकेत किये गये हैं।

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त  
कृपाशील तथा दयावान् है।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

1. साद। शपथ है शिक्षा प्रद कुर्आन की!
2. बल्कि जो काफिर हो गये वह एक गर्व तथा विरोध में ग्रस्त हैं।
3. हम ने विनाश किया है इन से पूर्व बहुत से समुदायों का। तो वह पुकारने लगे। और नहीं होता वह बचने का समय।

ص وَالْقُرْآنِ ذِي الذِّكْرِ

بَلِ الَّذِينَ كَفَرُوا فِي عِزَّةٍ وَشِقَاقٍ ۝

كَمْ أَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِنْ قَرْنٍ مَنَادُوا ذُرِّيَّتَهُمْ  
فَلَمْ يَسْتَجِبْ لَهُمْ مِنْ قَبْلِ اللَّهِ عَمَلٌ شَقِيقٌ ۝

4. तथा उन्हें आश्चर्य हुआ कि आ गया उन के पास उन्हीं में से एक सचेत करने<sup>[1]</sup> वाला! और कह दिया काफ़िरो ने कि यह तो बड़ा झूठा जादूगर है।
5. क्या उस ने बना दिया है सब पूज्यों को एक पूज्य? यह तो बड़े आश्चर्य का विषय है।
6. तथा चल दिये उन के प्रमुख (यह) कहते हुये कि चलो दृढ़ रहो अपने पूज्यों पर। इस बात का कुछ और ही लक्ष्य<sup>[2]</sup> है।
7. हम ने नहीं सुनी यह बात प्राचीन धर्मों में, यह तो बस मन- घड़त बात है।
8. क्या उसी पर उतारी गई है यह शिक्षा (कुर्आन) हमारे बीच में से? बल्कि वह संदेह में है मेरी शिक्षा से। बल्कि उन्होंने अभी यातना नहीं चखी है।
9. अथवा उन के पास है आप के अत्यंत प्रभुत्वशाली प्रदाता पालनहार की दया के कोष<sup>[3]</sup>।
10. अथवा उन्हीं का है राज्य आकाशों तथा धरती का। और जो कुछ उन दोनों के मध्य है? तो उन्हें

وَعَجِبُوا أَنْ جَاءَهُمْ مُنْذِرٌ مِنْهُمْ وَقَالَ الْكَافِرُونَ  
هَذَا صِرٌّ كَذَابٌ ۝

اجْعَلِ الْإِلَهَةَ إِلَهًا وَاحِدًا إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ عُجَابٌ ۝

وَانْطَلَقَ الْمَلَكُ مِنْهُمْ أَنْ امْشُوا وَاصْبِرُوا عَلَى إِلَهٍ كُفٍّ ۝  
إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ يُرَادُ ۝

مَا سَمِعْنَا بِهَذَا فِي الْمَلَأَةِ الْأَخْرَىٰ ۝ إِنَّ هَذَا لَآلَاءُ  
اِخْتِلَافٍ ۝

يُنْزِلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ مِنْ بَيْنِنَا بَلْ لَهُمْ فِي شَيْءٍ مِنْ  
ذِكْرُنَا بَلْ لَمْ يَدْقُوا آعْدَابَ ۝

أَمْعِنَدَهُمْ خَزَائِنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِيزِ الْوَهَّابِ ۝

أَمْ لَهُمْ مُلْكُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۝  
فَلْيَرْفَعُوا فِي الْأَسْبَابِ ۝

1 अर्थात मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)।

2 अर्थात एकेश्वरवाद की यह बात सत्य नहीं है और ऐसी बात अपने किसी स्वार्थ के लिये की जा रही है।

3 कि वह जिसे चाहें नबी बनायें।

चाहिये कि चढ़ जायें (आकाशों में)  
रसियाँ तान<sup>[1]</sup> कर।

11. यह एक तुच्छ सेना है यहाँ पराजित  
सेनाओं<sup>[2]</sup> में से।

12. झुठलाया इन से पहले नूह तथा  
आद और शक्तिवान फिरऔन की  
जाति ने।

13. तथा समूद और लूत की जाति एवं  
बन के वासियों<sup>[3]</sup> ने। यही सेनायें हैं।

14. इन सभी ने झुठलाया रसूलों को, तो  
मेरी यातना सिद्ध हो गई।

15. और यह नहीं प्रतीक्षा कर रहे हैं  
परन्तु एक कर्कश ध्वनि की जिस के  
लिये कुछ भी देर नहीं होगी।

16. तथा उन्होंने कहा कि हे हमारे  
पालनहार! शीघ्र प्रदान कर दे हमारे  
लिये हमारी (यातना का) भाग  
हिसाब के दिन से पहले<sup>[4]</sup>।

17. आप सहन करें उस पर जो वे कह  
रहे हैं। तथा याद करें हमारे भक्त  
दावूद को जो अत्यंत शक्तिशाली था  
निश्चय वह ध्यान मग्न था।

جُنْدًا مَاهُنَالِكَ مَهْزُومٌ مِنَ الْأَحْزَابِ ۝

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوحٍ وَعَادٌ وَرَعُونُ ذُو الْأَوَّلِينَ ۝

وَتَمُودٌ وَقَوْمُ لُوطٍ وَأَصْحَابُ نِيْلَكةٍ أُولَئِكَ  
الْأَحْزَابُ ۝

إِنَّ كُلَّ الْكَذَّابِ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابُ ۝

وَمَا يَنْظُرُهُمْ إِلَّا الصَّيْحَةُ وَاجِدَةٌ مَّا لَهَا  
مِنْ قَوَائِنٍ ۝

وَقَالُوا رَبَّنَا عَجِّلْ لَنَا قِطْعَانًا قَبْلَ يَوْمِ  
الْحِسَابِ ۝

إِصْبِرْ عَلَى مَا يَقُولُونَ وَادْخُلْ عِبْدَنَا دَاوُدَ  
ذَ الْأَيْدِ إِنَّهُ أَوَّابٌ ۝

1 और मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर प्रकाशना के अवतरण को रोक दें।

2 अर्थात् इन मक्का वासियों के पराजित होने में देर नहीं होगी।

3 इस से अभिप्राय शुऐब (अलैहिस्सलाम) की जाति है। (देखिये: सूरह, शुअरा आयत: 176)

4 अर्थात् वह उपहास स्वरूप कहते हैं कि प्रलय से पहले ही संसार में हमें यातना मिल जाये। अर्थ यह है कि हमें कोई यातना नहीं दी जायेगी।



18. हम ने वश्वर्ती कर दिया था पर्वतों को जो उसके साथ पवित्रता गान करते थे संध्या तथा प्रातः।
19. तथा पक्षियों को एकत्रित किये हुये, प्रत्येक उस के आधीन ध्यान मगन रहते थे।
20. और हम ने दृढ़ किया उस के राज्य को और हम ने प्रदान की उसे नबूवत तथा निर्णय शक्ति।
21. तथा क्या आया आप के पास दो पक्षों का समाचार जब वह दीवार फांद कर मेहराब (वंदना स्थल) में आ गये?
22. जब उन्होंने प्रवेश किया दावूद पर तो वह घबरा गया उन से। उन्होंने कहा: डरिये नहीं। हम दो पक्ष हैं अत्याचार किया है हम में से एक ने दूसरे पर। तो आप निर्णय कर दें हमारे बीच सत्य (न्याय) के साथ। तथा अन्याय न करें तथा हमें दर्शा दें सीधी राह।
23. यह मेरा भाई है उस के पास निबावे भेड़ हैं। और मेरे एक भेड़ हैं। तो यह कहता है कि वह (भी) मुझे दे दो। और यह प्रभावशाली हो गया मुझ पर बात करने में।
24. दावूद ने कहा: उस ने तुम पर अवश्य अत्याचार किया तुम्हारी भेड़ को (मिलाने की) माँग कर के अपनी भेड़ों में। तथा बहुत से साझी एक दूसरे पर अत्याचार करते हैं उन के सिवा जो

إِنَّا سَخَرْنَا الْجِبَالَ مَعَهُ يُسَبِّحْنَ بِالْعَمِيِّ  
وَالْأَشْرَاقِ ۝

وَالطَّيْرَ مَحْشُورَةً كُلٌّ لَّهِ أَكْوَابٌ ۝

وَشَدَدْنَا مُلْكَهُ وَأَتَيْنَاهُ الْحِكْمَةَ وَفَضَّلْنَا الْخِطَابَ ۝

وَهَلْ أَتَاكَ نَبَأُ الْخَصْمِ إِذْ تَسَوَّرُوا الْحُرَابَ ۝

إِذْ دَخَلُوا عَلَى دَاوُدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوا لَا تَخَفْ  
خَصْمَيْنِ بَغَى بَعْضُنَا عَلَى بَعْضٍ فَاحْكُم بَيْنَنَا  
يَا أَمِّيقُ وَلَا تَشْطِطْ وَاهِدِنَا إِلَى سَوَاءِ الصِّرَاطِ ۝

إِنَّ هَذَا أَخِي لَهُ تِسْعٌ وَتِسْعُونَ نَعْبَةً وَبِئْسَ نَجَّةٌ  
وَاحِدَةٌ قَالُوا لَنُبَلِّغَنَّهَا وَعَزَّزْنَا فِي الْخِطَابِ ۝

قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْبِكَ إِلَى نَعَاجِهِ وَإِنَّ  
كَثِيرًا مِّنَ الْخُلَطَاءِ لَيَبْغِي بَعْضُهُمْ عَلَى بَعْضٍ إِلَّا  
الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَفَلِيلُ تَأَمَّرُ

ईमान लाये तथा सदाचार किये। और बहुत थोड़े हैं ऐसे लोग। और दावूद ने भांप लिया की हम ने उस की परीक्षा ली है तो सहसा उस ने क्षमायाचना कर ली। और गिर गया सज्दे में तथा ध्यान मग्न हो गया।

وَلَقَدْ دَاوُدُ إِنَّمَا فَتَنَّاهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهُ وَخَرَّ رَاكِعًا  
وَأَنَابَ ۖ

25. तो हम ने क्षमा कर दिया उस के लिये वही तथा उस के लिये हमारे पास निश्चय सामिप्य है तथा अच्छा स्थान।

فَغَفَرْنَا لَهُ ذَلِكَ وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ  
مَآبٍ ۖ

26. हे दावूद! हम ने तुझे राज्य दिया है धरती में। अतः निर्णय कर लोगों के बीच सत्य (न्याय) के साथ तथा अनुसरण न कर आकांक्षा का। अन्यथा वह कुपथ कर देगी तुझे अल्लाह की राह से। निःसंदेह जो कुपथ हो जायेंगे अल्लाह की राह <sup>[1]</sup> से तो उन्हीं के लिये घोर यातना है, इस कारण कि वह भूल गये हिसाब का दिन।

يَا دَاوُدُ إِنَّا جَعَلْنَاكَ خَلِيفَةً فِي الْأَرْضِ فَاحْكُم بَيْنَ  
النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ الْهَوَىٰ فَيُضِلَّكَ عَنْ  
سَبِيلِ اللَّهِ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَفْلُتُونَ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ  
لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيدٌ يَوْمَ الْحِسَابِ ۚ

27. तथा नहीं पैदा किया है हम ने आकाश और धरती को तथा जो कुछ उन के बीच है व्यर्थ। यह तो उन का विचार है जो काफिर हो गये। तो विनाश है उन के लिये जो काफिर हो गये अग्नि से।

وَمَا خَلَقْنَا السَّمَاءَ وَالْأَرْضَ وَمَابَيْنَهُمَا بَاطِلًا  
ذَٰلِكَ ظَنُّ الَّذِينَ كَفَرُوا فَوَيْلٌ لِلَّذِينَ كَفَرُوا  
مِنَ النَّارِ ۚ

28. क्या हम कर देंगे उन्हें जो ईमान लाये तथा सदाचार किये उन के समान जो उपद्रवी हैं धरती में? या कर देंगे आज्ञाकारियों को उल्लंघनकारियों के समान? <sup>[2]</sup>

أَمْ يَجْعَلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ كَالْمُفْسِدِينَ  
فِي الْأَرْضِ أَمْ يَجْعَلُ الْمُتَّقِينَ كَالْفُجَّارِ ۚ

1 अल्लाह की राह से अभिप्राय उस का धर्म विधान है।

2 यह प्रश्न नकारात्मक है और अर्थ यह कि दोनों का परिणाम समान नहीं होगा।

29. यह (कुरआन) एक शुभ पुस्तक है। जिसे हम ने अवतरित किया है आप की ओर, ताकि लोग विचार करें उस की आयतों पर। और ताकि शिक्षा ग्रहण करें मतिमान।

كُتِبَ أَنْزَلْنَاهُ إِلَيْكَ مُبَارَكٌ لِيَدَّبَّرُوا آيَاتِهِ  
وَلِيَتَذَكَّرَ أُولُو الْأَلْبَابِ ﴿٢٩﴾

30. तथा हम ने प्रदान किया दावूद को सुलैमान (नामक पुत्र)। वह अति ध्यान मग्न था।

وَوَهَبْنَا لِدَاوُدَ دَسْلِيمَنَّ يَعْمَلُ الْعِبَادَ إِنَّهُ آوَابٌ ﴿٣٠﴾

31. जब प्रस्तुत किये गये उस के समक्ष संध्या के समय सधे हुये वेग गामी घोड़े।

إِذْ عَرَضَ عَلَيْهِ يَالْعِثَى الصَّفِينَةُ الْحَيَادُ ﴿٣١﴾

32. तो कहा: मैं ने प्राथमिकता दी इन घोड़ों के प्रेम को अपने पालनहार के स्मरण पर। यहाँ तक कि वह ओझल हो गये।

فَقَالَ إِنِّي أَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ رَبِّي حَتَّى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ﴿٣٢﴾

33. उन्हें वापिस लाओ मेरे पास। फिर हाथ फेरने लगे उन की पिंडलियों तथा गर्दनो पर।

رُدُّوهُمْ عَلَيَّ كَطَفِيقٍ مَحًّا يَالشُّوْقَ وَالْأَعْنَاقِ ﴿٣٣﴾

34. और हम ने परीक्षा<sup>[1]</sup> ली सुलैमान कि तथा डाल दिया उस के सिंहासन पर एक धड़ा फिर वह ध्यान मग्न हो गया।

وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمَانَ وَأَلْقَيْنَا عَلَى كُرْسِيِّهِ جَسَاقًا  
أَنَابَ ﴿٣٤﴾

35. उस ने प्रार्थना की: हे मेरे पालनहार! मुझे क्षमा कर दे। तथा मुझे प्रदान कर ऐसा राज्य जो उचित

قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِي وَهَبْ لِي مُلْكًا لَّا يَمُوتُنِي فِيهِ  
مِنْ بَعْدِي إِنَّكَ أَنْتَ الْوَهَّابُ ﴿٣٥﴾

1 हदीस से भाष्यकारों ने लिखा है कि सुलैमान (अलैहिस्सलाम) ने एक बार कहा कि मैं आज रात अपनी सभी पत्नियों जिन की संख्या 70 अथवा 90 थी, से संभोग करूँगा। जिन से योद्धा घुड़ सवार पैदा होंगे जो अल्लाह की राह में जिहाद करेंगे। तथा उन्होंने यह नहीं कहा: यदि अल्लाह ने चाहा। जिस का परिणाम यह हुआ कि केवल एक ही पत्नी गर्भवती हुई। और उस ने भी अधूरे शिशु को जन्म दिया। नबी (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) ने कहा: वह ((यदि अल्लाह ने चाहा)) कह देते तो सब योद्धा पैदा होते। (सहीह बुखारी, हदीस: 6639, सहीह मुस्लिम, हदीस: 1656)



न हो किसी के लिये मेरे पश्चात्।  
वास्तव में तू ही अति प्रदाता है।

36. तो हम ने बश में कर दिया उस के  
लिये वायु को जो चल रही थी धीमी  
गति से उस के आदेश से वह जहाँ  
चाहता।

37. तथा शैतानों को प्रत्येक प्रकार के  
निर्माता, तथा गोता खोर को।

38. तथा दूसरों को बंधे हुये बेड़ियों में।

39. यह हमारा प्रदान है। तो उपकार करो  
अथवा रोक लो, कोई हिसाब नहीं।

40. और वास्तव में उस के लिये हमारे  
पास सामिप्य तथा उत्तम स्थान है।

41. तथा याद करो हमारे भक्त अय्यूब  
को। जब उस ने पुकारा अपने  
पालनहार को कि शैतान ने मुझे को  
पहुँचाया<sup>[1]</sup> है दुःख, तथा यातना।

42. अपना पाँव (धरती पर) मार। यह है  
शीतल स्नान तथा पीने का जल।

43. और हम ने प्रदान किया उसे उस  
का परिवार तथा उनके साथ और  
उन के समान। अपनी दया से, और  
मतिमानों की शिक्षा के लिये।

44. तथा ले अपने हाथ में तीलियों की  
एक झाड़, तथा उस से मार और

فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيحَ تَجْرِي بِأَمْرِهِ رُخَاءً حَيْثُ أَصَابَ ۝

وَالشَّيْطَانِ كُلِّ بَنَاءٍ وَعَوَاصٍ ۝

وَالْآخَرِينَ مُقَرَّنِينَ فِي الْأَصْفَادِ ۝

هَذَا عَطَاؤُنَا فَامْنُنْ أَوْ أَمْسِكْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

وَإِنَّ لَهُ عِنْدَنَا لَزُلْفَىٰ وَحُسْنَ مَآبٍ ۝

وَاذْكُرْ عَبْدَنَا أَيُّوبَ إِذْ نَادَىٰ رَبَّهُ أَنِّي مَسَّنِيَ  
الشَّيْطَانُ بِنُصُوبٍ وَعَذَابٍ ۝

أَرْكُضْ بِرِجْلِكَ هَذَا غُغْغَسٌ مُّبَارَكٌ يَّارْدُ وَشَرَابٍ ۝

وَوَهَبْنَا لَهُ أَهْلَهُ وَمِثْلَهُم مَّعَهُمْ رَحْمَةً مِنَّا  
وَذِكْرَىٰ لَأُولَى الْأَلْبَابِ ۝

وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْتًا قَاصِرَةً بِهِ وَلَا تَحْنُثْ إِنَّا

1 अर्थात् मेरे दुःख तथा यातना के कारण मुझे शैतान उकसा रहा है तथा वह मुझे  
तेरी दया से निराश करना चाहता है।

अपनी शपथ भंग न कर। वास्तव<sup>[1]</sup>  
में हम ने उसे पाया धौर्य वान।  
निश्चय वह बड़ा ध्यान मग्न था।

وَجَدْنَاهُ صَابِرًا نِعْمَ الْعَبْدُ إِنَّهُ أَوَّابٌ ۝

45. तथा याद करो, हमारे भक्त इब्राहीम  
तथा इस्हाक एवं याकूब को, जो कर्म  
शक्ति तथा ज्ञानचक्षू<sup>[2]</sup> वाले थे।

وَاذْكُرْ عَبْدَنَا إِبْرَاهِيمَ وَإِسْحَاقَ وَيَعْقُوبَ أُولَى  
الْأَيْدِي وَالْأَبْصَارِ ۝

46. हम ने उन्हें विशेष कर लिया बड़ी  
विशेषता परलोक (आखिरत) की  
याद के साथ।

إِنَّا أَخْلَصْنَاهُمْ بِخَالِصَةٍ ذُكِّرَى الْكَافِرِ ۝

47. वास्तव में वह हमारे यहाँ उत्तम  
निर्वाचितों में से थे।

وَأَنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْأَخْيَارِ ۝

48. तथा आप चर्चा करें इसमाईल तथा  
यसअ एवं जुलकिफल की। और यह  
सभी निर्वाचितों में से थे।

وَاذْكُرْ إِسْمَاعِيلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ وَكُلٌّ مِّنَ  
الْأَخْيَارِ ۝

49. यह (कुरआन) एक शिक्षा है तथा  
निश्चय आज्ञाकारियों के लिये उत्तम  
स्थान है।

هَذَا ذِكْرٌ وَإِن لِلْمُتَّقِينَ لَحُسْنَ مَّآبٍ ۝

50. स्थायी स्वर्ग खुले हुये हैं उन के लिये  
(उन के) द्वारा।

جَنَّاتٍ عَدْنٍ مِّنْ مَّغْنَمِهِمْ فِيهَا نَجَّاتُهُم مِّنَ النَّارِ ۝

51. वे तकिये लगाये होंगे उन में। मागेंगे  
उन में बहुत से फल तथा पेय पदार्थ।

مُتَّكِئِينَ فِيهَا يَدْعُونَ فِيهَا بِخَمَرٍ مُّكْتَفَرَةٍ  
وَسُرَّابٍ ۝

52. तथा उन के पास आँखें सीमित रखने  
वाली समायु पत्नियाँ होंगी।

وَعِنْدَهُمْ قُصُورٌ الْغُرُفِ أَتْرَابٍ ۝

53. यह है जिस का वचन दिया जा रहा  
था तुम्हें हिसाब के दिन।

هَذَا مِمَّا تُوَعَّدُونَ لِلْيَوْمِ الْحَسَابِ ۝

1 अय्युब (अलैहिस्सलाम) की पत्नी से कुछ चूक हो गई जिस पर उन्होंने उसे सौ  
कोड़ें मारने की शपथ ली थी।

2 अर्थात् आज्ञा पालन में शक्तिवान तथा धर्म का बोध रखते थे।



54. यह है हमारी जीविका जिस का कोई अन्त नहीं है।
55. यह है। और अवैज्ञाकारियों के लिये निश्चय बुरा स्थान है।
56. नरक है, जिस में वे जायेंगे, क्या ही बुरा आवास है!
57. यह है। तो तुम चखो खौलता पानी तथा पीप।
58. तथा कुछ अन्य इसी प्रकार की विभिन्न यातनायें।
59. यह<sup>[1]</sup> एक और जत्था है जो घुसा आ रहा है तुम्हारे साथ। कोई स्वागत नहीं है उन का। वास्तव में वह नरक में प्रवेश करने वाले हैं।
60. वह उत्तर देंगे: बल्कि तुम। तुम्हारा कोई स्वागत नहीं। तुम्हीं आगे लाये हो इस (यातना) को हमारे। तो यह बुरा निवास है।
61. (फिर) वह कहेंगे: हमारे पालनहार! जो हमारे आगे लाया है इसे, उस को दुगुनी यातना दे नरक में।
62. तथा (नारकी) कहेंगे: हमें क्या हुआ है कि हम कुछ लोगों को नहीं देख रहे हैं जिन की गणना हम बुरे लोगों में कर<sup>[2]</sup> रहे थे?

إِنَّ هَذَا رِزْقُنَا مَالَهُ مِنْ تَفَادٍ ۝

هَذَا وَإِنَّ لِلظَّالِمِينَ أَكْثَرَ مَالٍ ۝

جَهَنَّمَ يَصْلَوْنَهَا فَيَقْسُوا بِهَا ۝

هَذَا فَلْيَذُوقُوا حَيْمُومًا وَغَسَّاقًا ۝

وَأُخَرُ مِنْ شَكْلِهِ أَزْوَاجٌ ۝

هَذَا قَوْمٌ مُتَعَجِّبُونَ مَعَكُمْ لَا مَرْجَاءَ لَهُمْ  
إِنَّهُمْ صَالُوا النَّارَ ۝

قَالُوا بَلْ أَنْتُمْ لَمَرْجَاءُكُمْ أَنْتُمْ قَدْ مَنَّوْهُ  
لَنَا قَيْشَ الْعَرَارِ ۝

قَالُوا رَبَّنَا مَنْ قَدْ مَنَّ لَنَا هَذَا فِرْدَوْهُ عَذَابًا ضِعْفًا  
فِي النَّارِ ۝

وَقَالُوا مَا لَنَا لَا نَرَى رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِنَ  
الْأَشْرَارِ ۝

1 यह बात काफ़िरों के प्रमुख जो पहले से नरक में होंगे अपने उन अनुयायियों से कहेंगे जो संसार में उन के अनुयायी बने रहे उस समय जब उन के अनुयायियों का गिरोह नरक में आने लगेगा।

2 इस से उन का संकेत उन निर्धन-निर्बल मुसलमानों की ओर होगा जिन्हें वह

63. क्या हम ने उन्हें उपहास बना रखा था अथवा चूक रही हैं उन से हमारी आँखें?

أَلْخَذْنَا لَهُمْ بِعُزْرَتٍ أَمْ زَاغَتْ عَنْهُمْ الْبَصَارُ ۝

64. निश्चय सत्य है नारकियों का आपस में झगड़ना।

إِنَّ ذَلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ أَهْلِ النَّارِ ۝

65. हे नबी! आप कह दें: मैं तो मात्र सचेत करने वाला<sup>[1]</sup> हूँ तथा कोई (सच्चा) पूज्य नहीं है अकेले प्रभावशाली अल्लाह के सिवा।

قُلْ إِنَّمَا أَنَا مُنذِرٌ وَمَنْ إِلَهِ إِلَّا اللَّهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝

66. वह आकाशों तथा धरती का और जो कुछ उन दोनों के मध्य है सब का पालनहार अति प्रभाव शाली क्षमी है।

رَبُّ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيزُ الْغَفَّارُ ۝

67. आप कह दें कि यह<sup>[2]</sup> बहुत बड़ी सूचना है।

قُلْ هُوَ نَبَأٌ عَظِيمٌ ۝

68. और तुम हो कि उस से मुँह फेर रहे हो।

أَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُونَ ۝

69. मुझे कोई ज्ञान नहीं है उच्च सभा वाले (फरिश्ते) जब वाद- विवाद कर रहे थे।

مَا كَانَ لِي مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَائِكَةِ الْأَعْلَى إِذْ يَخْتَصِمُونَ ۝

70. मेरी ओर तो मात्र इस लिये बह्नी (प्रकाशना) की जा रही है कि मैं खुला सचेत करने वाला हूँ।

إِنْ يُؤْمَرُ إِلَى إِلَّا أَنْتُمْ أَنْتُمْ تَرْتَابُونَ ۝

71. जब कि कहा आप के पालनहार ने फरिश्तों से: मैं पैदा करने वाला हूँ एक मनुष्य मिट्टी से।

إِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلِكَةِ إِنِّي خَالِقٌ بَشَرًا مِنْ طِينٍ ۝

संसार में उपद्रवी कह रहे थे।

1 कुर्आन ने इसे बहुत सी आयतों में दुहराया है कि नबियों का कर्तव्य मात्र सत्य को पहुँचाना है। किसी को बल पूर्वक सत्य को मनवाना नहीं है।

2 परलोक की यातना तथा तौहीद (ऐकेश्वरवाद) की जो बातें तुम्हें बता रहा हूँ।

72. तो जब मैं उसे बराबर कर दूँ तथा फूँक दूँ उस में अपनी ओर से रूह (प्राण) तो गिर जाओ उस के लिये सज्दा करते हुये।

73. तो सज्दा किया सभी फ़रिश्तों ने एक साथ।

74. इब्लीस के सिवा, उस ने अभिमान किया और हो गया काफ़िरों में से।

75. अल्लाह ने कहा: हे इब्लीस! किस चिज़ ने तुझे रोक दिया सज्दा करने से उस के लिये जिस को मैं ने पैदा किया अपने हाथ से? क्या तू अभिमान कर गया अथवा वास्तव में तू ऊँचे लोगों में से है?

76. उस ने कहा: मैं उस से उत्तम हूँ। तू ने मुझे पैदा किया है अग्नि से तथा उसे पैदा किया है मिट्टी से।

77. अल्लाह ने कहा: तू निकल जा यहाँ से, तू वास्तव में धिक्कृत है।

78. तथा तुझ पर मेरी दया से दूरी है प्रलय के दिन तक।

79. उस ने कहा: मेरे पालनहार! मुझे अवसर दे उस दिन तक जब लोग पूनः जीवित किये जायेंगे।

80. अल्लाह ने कहा: तुझे अवसर दे दिया गया।

81. निर्धारित समय के दिन तक।

82. उस ने कहा: तो तेरे प्रताप की

فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِنْ رُوحِي فَقَعُوا لَهُ لَٰعِدِينَ ۝

فَسَجَدَ الْمَلَائِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ۝

إِلَّا إِبْلِيسَ اسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكَافِرِينَ ۝

قَالَ يَا إِبْلِيسُ مَا مَنَعَكَ أَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ۖ اسْتَكْبَرْتَ ۖ أَكُنْتُ مِنَ الْعَالِينَ ۝

قَالَ أَنَا خَيْرٌ مِنْهُ خَلَقْتَنِي مِنْ نَّارٍ وَخَلَقْتَهُ مِنْ طِينٍ ۝

قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ۝

وَأَنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِي إِلَى يَوْمِ الدِّينِ ۝

قَالَ رَبِّ فَأَنْظِرْنِي إِلَى يَوْمِ يُبْعَثُونَ ۝

قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِينَ ۝

إِلَى يَوْمِ الْوَعْدِ الْمَعْلُومِ ۝

قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَا أُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ۝



शपथ! मैं अवश्य कुपथ कर के  
रहूँगा सब को।

83. तेरे शुद्ध भक्तों के सिवा उन में से।

84. अल्लाह ने कहा: तो यह सत्य है और  
मैं सत्य ही कहा करता हूँ:

85. कि मैं अवश्य भर दूँगा नरक को  
तुझ से तथा जो तेरा अनुसरण करेंगे  
उन सब से।

86. (हे नबी!) कह दें कि मैं नहीं माँग  
करता हूँ तुम से इस पर किसी  
पारिश्रमिक की, तथा मैं नहीं हूँ  
अपनी ओर से कुछ बनाने वाला।

87. नहीं है यह (कुर्आन) परन्तु एक  
शिक्षा सर्वलोक वासियों के लिये।

88. तथा तुम्हें अवश्य ज्ञान हो जायेगा  
उस के समाचार (तथ्य) का एक  
समय के पश्चात्।

إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمْ الْمُخْلِصِينَ ۝

قَالَ فَالْحَقُّ وَالْحَقِّي أَقُولُ ۝

لَأَمْلَأَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَتَّبِعُكَ مِنْهُمْ  
أَجْمَعِينَ ۝

قُلْ مَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ وَمَا أَنَا مِنَ  
الْمُتَكَلِّفِينَ ۝

إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِلْعَالَمِينَ ۝

وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَأَهُ بَعْدَ حِينٍ ۝

